एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 06, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2026)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

बरसात में पशुओं की देखभाल

*कैलाश
श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, जयपुर, राजस्थान
*संवादी लेखक का ईमेल पता: solankikishu22@gmail.com

बरसात क मौसम में पशुओं का खास ध्यान रखना चाइये | साधारणतया भारत में वर्षा ऋतु का समय 15 जून से 15 सितम्बर तक का होता है।इस मोसम में वातावरण में अधिक आद्रता होने तथा तापमान में होने वाले उतार चढाव के कारण पशुओं पर नाकारात्मक प्रभाव पड़ता है |अगर सही समय पर ध्यान नहीं रखा गया तो पशु क स्वास्थ्य और उत्पादन पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

बरसात से बचाने क लिए उचित आवास, आहार और स्वास्थ्य का प्रबधन करना चाहिए ।

पशु आवास ऊँची जगह पर होना चाहिए | फर्श ढलाननुमा होना चाहिए ताकि पानी ना रुके और साफ सुथरा एवं सूखा रखना चाहिए ताकि पशु फिसले ना |शेड्स या बाड़ा हवादार हो और छत से पानी नहीं टपकना चाहिए | सांप -बिच्छू से बचाव क लिए आवास को चारो तरफ से बंद रखना चाहिए , पशुओं को बिजली के खम्बे से नहीं बांधना चाहिए |पशु आवास सूखा और साफ सुथरा होने से बहुत सी बीमारियों एवं संक्रमण से बचाया जा सकता है |लगातार गीले होने के कारण पशुओं के खुरों में संक्रमण होने की संभावना अधिक रहती है, इसलिए सप्ताह में एक या दो बार हल्के लाल दवाई के घोल से पशुओं के खुरों को साफ करना चाहिए। बाड़े के आसपास पानी का ठहराव नहीं होना चाहिए। गंदे पानी व स्थानों पर मच्छर व मक्खी पनपते हैं जो की बीमारियों के प्रवाहक है।

पशु को बरसात में सुपाच्य संतुलित आहार दें जिसमे 60 प्रतिशत गीला/हरा चारा और 40 प्रतिशत सूखा चारा होना चाहिए। साथ में रोज 30-40 ग्राम सादा नमक और 25-35 ग्राम खनिज मिश्रण खिलाना चाहिए।बरसात के मौसम में हरी घास का उत्पादन अधिक होता है परंतु इस घास मे पानी अधिक और कम पोषक तत्व ओर रेशे होते है जो पशु के पाचन के लिए उचित नहीं होता और इसलिए भी इस मौसम मे पशु को दस्त लग जाते हैं। इस मौसम में आहार के भंडारण पर भी ध्यान देना चाहिए अन्यथा दाना और चारा गीला होने से उसमे सडन लग सकती है जो हमारे पशु को बीमार कर देगी। पशु को हरा चारा आच्छी तरह झाड़ कर खिलाएं |ध्यान रहे सूखे चारे में गीलापन या फफूंद न हो, अन्यथा पशुओं को अफ्लाटोक्सिकोसिस, बदहजमी, दस्त जैसी बीमारियाँ हो सकती हैं। हरा चारा साफ होना चाहिए, उसमे कीचड़ न लगा हो। पशुओं को साफ़ सुथरा पानी पिलायें।

बरसात के मौसम में सबसे जरुरी बात है पशुओं का स्वास्थ्य प्रबंधन करना| क्योंकि अगर उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं है तो उनके चारा ग्रहण में कमी हो जाती है और उससे उनके दूध उत्पादन में कमी हो जाती है। बरसात में होने वाले विभिन रोग जैसे गलघोंटू, लंगड़ा बुखार, खुरपका मुंहपका आदि - रोगो से बचाव क लिए टीकाकरण अवश्य करवाए | उनके शरीर पर जुए, पिस्सू,कीड़े,मच्छर-मक्खी आदि बाह्य परजीवी से बचाकर रखना| बरसात में उनके पेट में कृमि हो जाते है अत: उनके नियंत्रण हेतु डॉक्टर की सलाह लेकर, इनका नियंत्रण करना चाहिए, क्योंकि पशु स्वस्थ रहेगा तभी बेहतर उत्पादन होगा |